Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/236
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2024, Vol- 13/84

स्ववित्त पोषित एवं वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक एवं प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन

Sanjay Singh

Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)

E-mail: ss8247094@gmail.com

Dr. Suresh Chandra

Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)

E-mail: s.chandrapbt@gmail.com

Dr. Ashok Kumar

Asst. Prof., Pushp Institute of Sciences & Higher Studies, Pilibhit (U.P.)

E-mail: ashokllbau@gmail.com

Paper Received On: 20 July 2024

Peer Reviewed On: 24 August 2024

Published On: 01 September 2024

Abstract

प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य मुरादाबाद के स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक एवं प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोधकार्य वर्णानात्मक शोध विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में शोधार्थी के द्वारा जनपद मुरादाबारद के 10 माध्यमिक विद्यालयों (5 स्ववित्त पोषित 5 वित्त पोषित) से 150 (50 शिक्षक व 100 छात्र) को सम्मिलित किया गया। समंकों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। संकलित समंकों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रतिशत सांख्यिकी को प्रयोग में लाया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर मुरादाबाद के स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक व प्रशासनिक समस्याएं समान रूप में पायी गयीं।

मुख्य शब्दावली *: स्ववित्त पोषित, वित्त पोषित, माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक व प्रशासनिक समस्याएं।*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी राष्ट्र की उन्नति का आधार होती है। यदि किसी देश के आर्थिक विकास अथवा संस्कृति की सम्पन्नता को मापना है तो उस देश की शैक्षिक प्रगति को सबसे पहले देखना चाहिए क्योंकि शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़कर ही कोई देश विकास की चरम सीमा तक पहुंच सकता है। भारत में शिक्षा का विभाजन प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में किया गया। माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षा व उच्च शिक्षा के बीच की एक आवश्यक कड़ी है। माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य बालक में बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक, व्यावसायिक कुंशलता, नेतृत्व की क्षमता, लोकतांत्रिक एवं घर्म र्निपेक्षता आदि के गुणों का विकास करना है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा कक्षा 9 से 12 तक की होती है। माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा की सबसे कमजोर कड़ी भी कहा गया है। इसका मुख्य कारण माध्यमिक शिक्षा की विभिन्न प्रकार की समस्याएं हैं। माध्यमिक शिक्षा की विभिन्न समस्याओं में से एक समस्या शिक्षा के संचालन एवं प्रशासन से सम्बन्धित है। जिसकों दृष्टि में रखते हुए शोधकर्ता के द्वारा स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक एवं प्रशासन समस्याओं का अध्ययन किया गया।

पृष्ठिभूमि

माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता के अतिरिक्त मनुष्य के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए, रोज़गार उपलब्ध कराने एवं क्षेत्रीय पिछड़ेपन को दूर करने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करती है जो किसी राष्ट्र के प्रगति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। माध्यमिक शिक्षा के महत्व को समझते हुए शोधछात्र द्वारा पूर्व किये गये शोध कार्यों का अध्ययन निम्न प्रकार किया। जैकब, टेरहेम्बा, अहैटु एण्ड नडुबुसि (2021) ने एजुकेशनल एडमिनिसट्रेशन इन नाइजिरिया : चैलेन्जेज एण्ड दी वेज फॉरवर्ड पर अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि अपर्याप्त धन, पेशेवर शिक्षकों का अभाव, अपर्याप्त ढ़ाचागत सुविधाएं, भ्रष्टाचार, असुरक्षा, लचर प्रशासन, आंकड़ों का अभाव, नीतियों में अस्थिरता, हड़ताल एवं मस्तिष्क पलायन आदि समस्याएं है। छावडा एवं धाकड (2024) ने एजूकेशनल एडमिनिसट्रेटिब प्रॉबलम ऑफ सेकेण्डरी स्कूलस इन इण्डिया पर शोध किया और उन्होंने पाया कि माध्यमिक शिक्षा के सम्पूर्ण विकास हेतु ढांचागत विकास, समान वित्त पोषण, शिक्षकों की नियमित नियुक्त एवं ठहराव, मानकीकृत पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन व सफल संचालन के द्वारा ही किसी राष्ट्र का विकास किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालय व वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक व प्रशासनिक समस्याओं को जानने के लिए शिक्षकों एवं छात्रों के विचारों का अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

स्ववित्त पोषित एवं वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक एवं प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन।

संक्रियात्मक परिभाषा

वित्त पोषित

वित्त पोषित विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिनका पूर्ण संचालन सरकार द्वारा किया जाता है।

स्ववित्त पोषित

स्ववित्त पोषित विद्यालयों से आशय ऐसे विद्यालयों से है जिनका संचालन निजी प्रबन्ध तंत्र के द्वारा किया जाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

माध्यमिक विद्यालय

माध्यमिक विद्यालय वे विद्यालय है जिनमें कक्षा 9–12 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

वित्त पोषित एवं स्व वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक एवं प्रशासनिक समस्याओं का अवलोकन करना।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के अन्तर्गत पश्चिमी उतर प्रदेश के मुरादाबाद जनपद के वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एंव उनमें अध्ययनरत् छात्रों को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्श एंव न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में मुरादाबाद जनपद के 5 वित्त पोषित एंव 5 स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों से 150 (50 शिक्षक एंव 100 छात्रो) न्यादर्श का चयन दैव न्यादर्शन की लॉटरी विधि का प्रयोग कर किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में संमकों के संकलन हेतु शोधकर्ता के द्वारा एक स्वनिर्मित शैक्षिक एवं प्रशासनिक समस्या प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा संकलित संमकों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रतिशत सांख्यिकी को प्रयोग में लाया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

1. विद्यालय शिक्षण कार्य समय–सारणी के अनुसार होता है।

तालिका–1

प्रतिक्रिया	छात्र (100)				शिक्षक (50)			
	वित्त पोषित		स्ववित्त पोषित		वित्त पोषित		स्ववित्त पोषित	
	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हाँ	37	74	38	76	25	100	25	100
नहीं	7	14	8	16	–	–	–	–
अनिश्चित	6	12	4	8	–	–	–	–

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुल	50	100	50	100	25	100	25	100

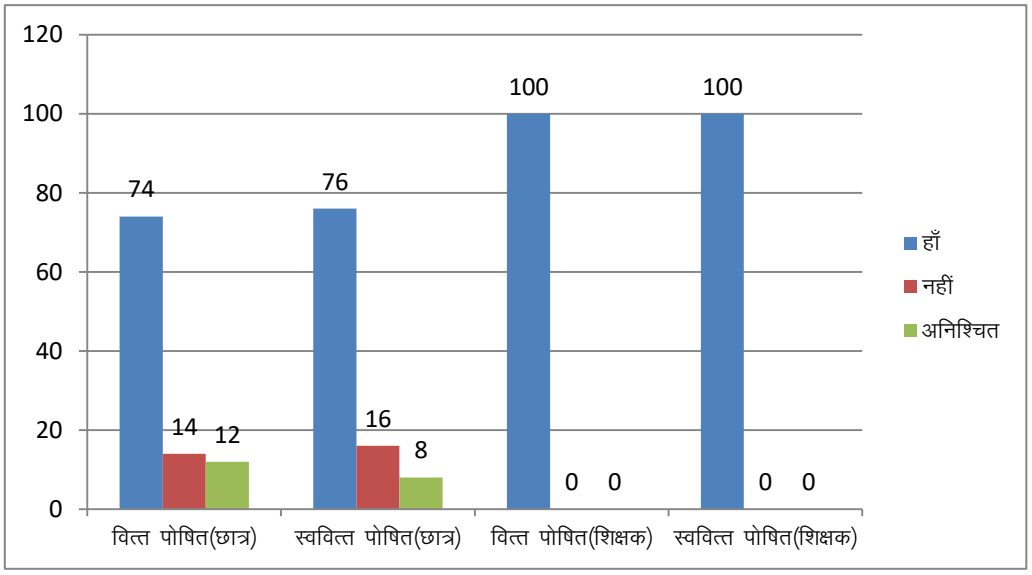

तालिका व रेखाचित्र–1 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यालय में शिक्षण कार्य समय–सारणी के अनुसार होता है के सन्दर्भ में 74 प्रतिशत वित्त पोषित संस्थानों के छात्र ने हाँ, 14 प्रतिशत ने नहीं व 12 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित प्रतिक्रिया पर अपना मत व्यक्त किया वहीं स्ववित्त शिक्षण संस्थानों के 76 प्रतिशत छात्रों ने हाँ में, 16 प्रतिशत ने नहीं तथा 6 प्रतिशत छात्र ऐसे पाये गये जिन्होंने अनिश्चित प्रतिक्रिया पर सहमति व्यक्त की। इसी प्रकार वित्त पोषित विद्यालय के 100 प्रतिशत शिक्षकों की प्रतिक्रिया हाँ में तथा स्ववित्त पोषित विद्यालय के 100 प्रतिषत शिक्षकों की प्रतिक्रिया हॉ में व्यक्त की गयी। उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में शिक्षण कार्य समय–सारणी के अनुसार होता है।

2. विद्यालयों में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है।

तालिका–2

प्रतिक्रिया	**छात्र (100)**				**शिक्षक (50)**			
	वित्त पोषित		**स्ववित्त पोषित**		**वित्त पोषित**		**स्ववित्त पोषित**	
	संख्या	**%**	**संख्या**	**%**	**संख्या**	**%**	**संख्या**	**%**
हाँ	15	30	17	34	11	44	10	40
नहीं	30	60	28	56	14	56	15	60

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनिश्चित	5	10	5	10	—	—	—	—
कुल	50	100	50	100	25	100	25	100

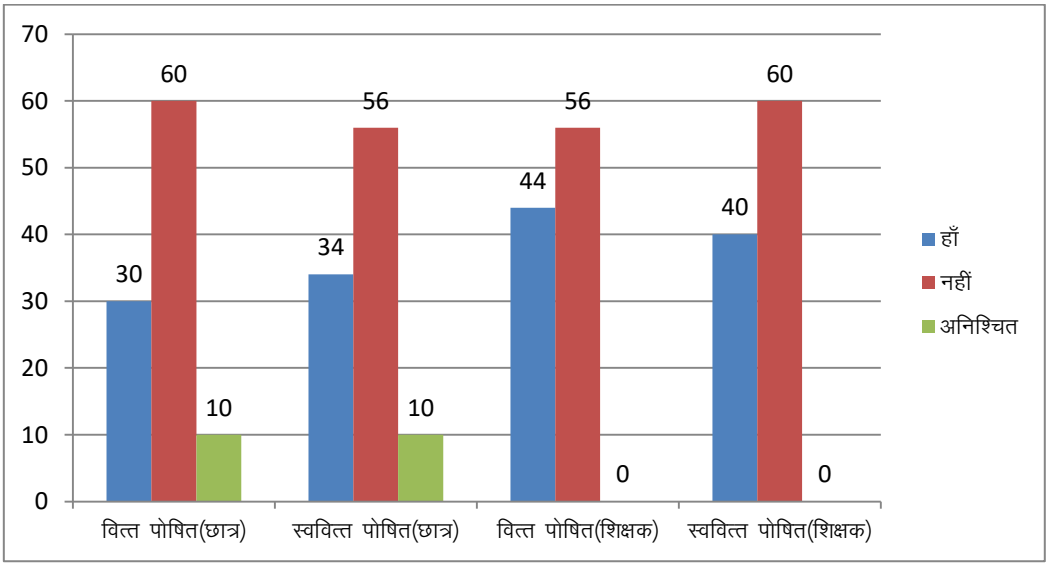

रेखाचित्र–2

तालिका व रेखाचित्र–2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि विद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है इस विन्दु पर वित्त पोषित विद्यालयों के 30 प्रतिशत छात्रों की राय हाँ 60 प्रतिशत की नहीं में तथा 10 प्रतिशत छात्र कुछ न कहने की स्थिति में हैं। इसी प्रक्रार स्ववित्त पोषित विद्यालय के 34 प्रतिशत हाँ में 56 प्रतिशत नहीं तथा 10 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसी प्रकार वित्त पोषित शिक्षकों ने 44 प्रतिशत हाँ में, 56 प्रतिशत नहीं में तथा अनिश्चित पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने वालों का प्रतिशत शून्य पाया गया। स्ववित्त पोषित विद्यालय के 40 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में 60 प्रतिशत ने नहीं में तथा अनिश्चित पर किसी भी शिक्षक के द्वारा कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की गयी।

3. विद्यालय में वाचनालय की व्यवस्था है।

तालिका–3

प्रतिक्रिया	छात्र (100)				शिक्षक (50)			
	वित्त पोषित		स्ववित्त पोषित		वित्त पोषित		स्ववित्त पोषित	
	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हाँ	15	30	13	26	5	20	5	20
नहीं	15	30	13	26	20	80	20	80

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनिश्चित	20	40	24	48	—	—	—	—
कुल	50	100	50	100	25	100	25	100

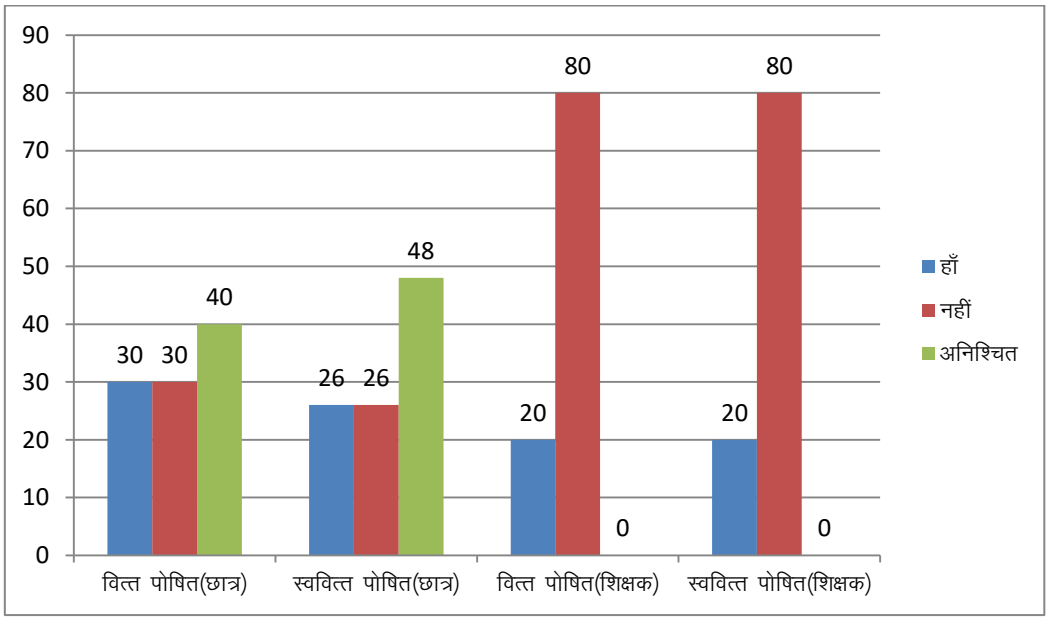

तालिका व रेखाचित्र 3 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय में वाचलानय की व्यवस्था है विषय पर वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 30 प्रतिशत छात्रों ने हाँ में, 30 प्रतिशत ने नहीं में तथा 40 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसी प्रकार स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 26 प्रतिशत छात्रों ने हाँ में, 26 प्रतिशत छात्रों ने नहीं में तथा 48 प्रतिशत अनिश्चित प्रतिक्रिया पर अपनी सहमति व्यक्त की। इसी प्रकार माध्यमिक विद्यालयों के वित्तपोषित 20 प्रतिशत शिक्षकों ने अपनी प्रतिक्रिया हाँ में, 80 प्रतिशत ने नहीं में तथा अनिश्चित प्रतिक्रिया किसी भी अध्यापक ने व्यक्त नहीं की इसी क्रम में स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालय के 20 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में, 80 प्रतिशत ने नहीं में तथा अनिश्चित कि प्रतिक्रिया किसी भी शिक्षक ने व्यक्त नही की।

4. विद्यालय में छात्रों को खेल–कूद के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।

तालिका–4

प्रतिक्रिया	**छात्र (100)**				**शिक्षक (50)**			
	वित्त पोषित		**स्ववित्त पोषित**		**वित्त पोषित**		**स्ववित्त पोषित**	
	संख्या	**%**	**संख्या**	**%**	**संख्या**	**%**	**संख्या**	**%**
हाँ	25	50	30	60	16	64	18	72

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं	20	40	10	20	5	20	5	20
अनिष्चित	5	10	10	20	4	16	2	8
कुल	50	100	50	100	25	100	25	100

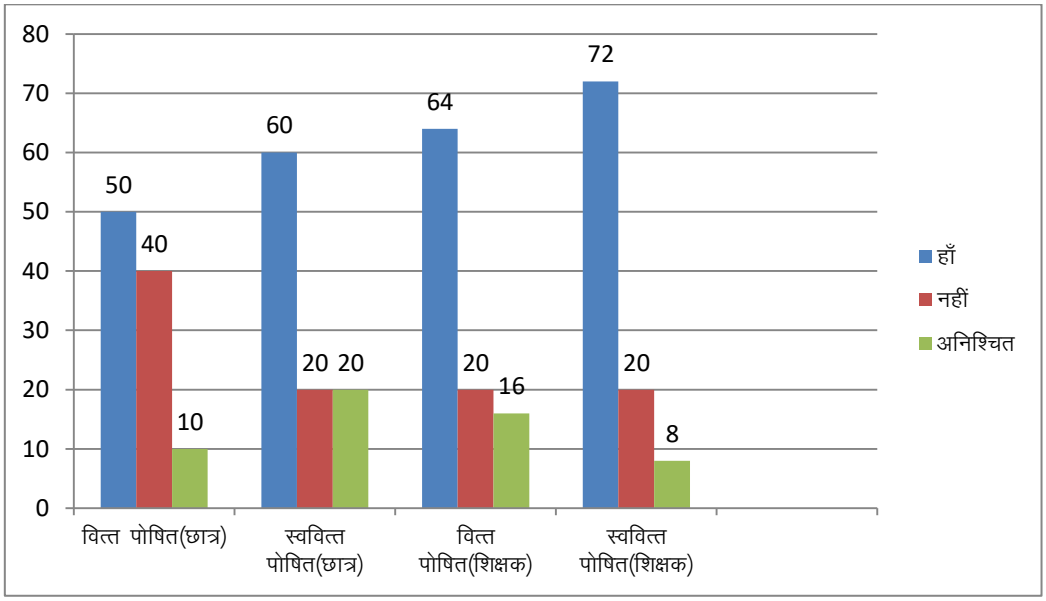

तालिका व रेखाचित्र 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विद्यालय में छात्रों को खेल–कूद के लिए पर्याप्त समय दिये जाने के सन्दर्भ में वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालय के 50 प्रतिशत छात्रों की प्रतिक्रिया हाँ में, 40 प्रतिशत की नहीं में तथा 10 प्रतिशत छात्र अनिश्चित की स्थिति में पाये गये। इसी प्रकार स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 60 प्रतिशत छात्रों की प्रतिक्रिया हाँ में, 20 प्रतिशत की नहीं में जबकि 20 प्रतिशत छात्रों की प्रतिक्रिया अनिश्चित में पायी गयी। वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 64 प्रतिशत शिक्षकों की प्रतिक्रिया हाँ में, 20 प्रतिशत की नहीं में तथा 16 प्रतिशत नें अनिश्चित में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसी प्रकार स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालय के 72 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में तथा 20 प्रतिशत शिक्षकों ने नहीं में एवं 08 प्रतिशत ने अनिश्चित पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

5. वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में योग्य अध्यापकों का चयन होता है।

तालिका–5

प्रतिक्रिया	**छात्र (100)**	**शिक्षक (50)**		
	वित्त पोषित	**स्ववित्त पोषित**	**वित्त पोषित**	**स्ववित्त पोषित**

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
हाँ	25	50	26	52	14	56	15	60
नहीं	20	40	20	40	11	44	10	40
अनिश्चित	5	10	4	8	—	—	—	—
कुल	50	100	50	100	25	100	25	100

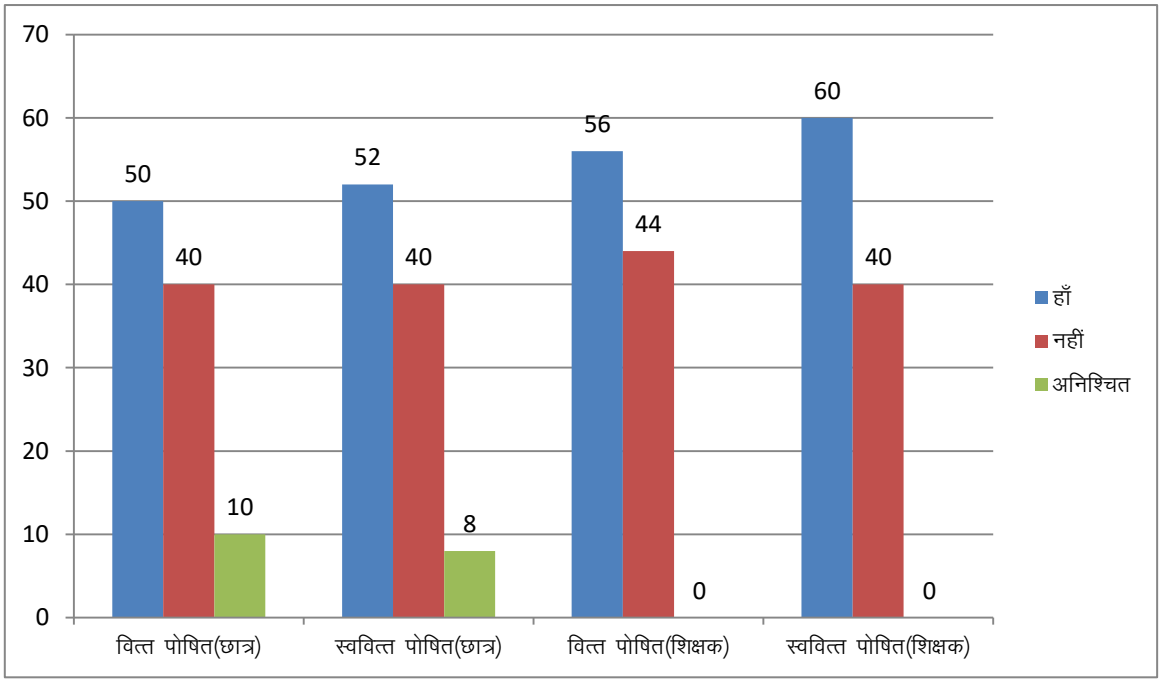

तालिका व रेखाचित्र 5 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 50 छात्रों ने हाँ, 40 प्रतिशत ने नहीं में तथा 10 प्रतिशत छात्रों अनिश्चित प्रतिक्रिया व्यक्त की वैसे ही स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 52 प्रतिशत छात्रों ने हाँ में, 40 प्रतिशत ने नहीं में तथा 08 प्रतिशत छात्रों ने अनिश्चित प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसी क्रम में वित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 56 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में, 44 प्रतिशत ने नहीं में तथा अनिश्चित पर किसी भी शिक्षक ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के 60 प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में, 40 प्रतिशत ने नहीं में तथा अनिश्चित पर किसी शिक्षक ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

निष्कर्ष

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यालय में शिक्षण कार्य समय–सारणी के अनुसार होता है को औसत से छात्रों व शत प्रतिशत शिक्षकों ने होना स्वीकार किया।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. विद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा दी जाती है को औसत से अधिक छात्र व शिक्षकों ने अस्वीकार किया।
3. विद्यालय में वाचनालय की व्यवस्था है को छात्र ने औसत रूप से व शिक्षकों ने औसत से अधिक रूप में अस्वीकार किया।
4. छात्रों व शिक्षकों ने औसत रूप से स्वीकार किया कि सभी विद्यालय में खेल–कूद के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।
5. छात्रों ने औसत रूप में वहीं औसत से अधिक शिक्षकों ने स्वीकार किया कि वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में योग्य अध्यापकों का चयन किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, के. (2004). भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास. आगरा. एच. पी. भार्गव बुक हाउस. (3). 195–196.

जैकब, एन. ओ., टेरहेम्बा, ए., अहैटु एण्ड नडुबुसि, जी. (2021). एडुकेशनल एडमिनिसट्रेशन इन नाइजिरिया : चैलेन्जेज एण्ड दी वेज फॉरवर्ड. सेन्ट्रल एसियन जर्नल ऑफ थियोरिटिकल एण्ड अप्लायड साइंसेस. 02 (08). 11–24.

एनसीइआरटी. (2022). चैलेन्जेज इन सेकण्डरी एडजुकेशन इन इण्डिया. न्यू देहली.

छावडा, एस. एण्ड धाकड, पी. (2024). एजूकेशनल एडमिनिसट्रेटिब प्रॉबलम ऑफ सेकेण्डरी स्कूलस इन इण्डिया. जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजिज एण्ड इन्नोवेटिव रिर्सच (जेइटीआईआर). 11 (6). 123–126.

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies